



एक सुन्दर सत्य -4

“सुप्रीमो के बस कहने की देर थी कि ज़न्नत ने सुप्रीमो के लण्ड पर अपने रसीले अधर रख दिये, उसे चूम लिया। ज़न्नत खुद कोई मौका गंवाना नहीं चाह रही थी सुप्रीमो को खुश करने का... ..”

Story By: (hellosweetgirls)

Posted: Wednesday, February 25th, 2015

Categories: [बॉलीवुड फैंटेसी](#)

Online version: [एक सुन्दर सत्य -4](#)

एक सुन्दर सत्य -4

ज़न्नत की चूत अब कामरस छोड़ने लगी थी और उस पर पानी चमक रहा था।

सुप्रीमो जैसा मर्द तो उस देख कर और उग्र हो गया, उसकी ज़ुबान अपने आप उस चिकनी चूत के अन्दरूनी लबों को चाटने लग गई।

अब तो ज़न्नत हवा में उड़ने लगी थी, उसका रोम रोम सुलगने लगा था।

सुप्रीमो ने चूत को चाट चाट के इतना मजबूर कर दिया कि वो बस बहने लगी, उसकी धारा सुप्रीमो पीने लगा जैसे समुद्र मंथन से अमृत निकल रहा हो।

ज़न्नत कमर को उठा उठा कर मज़े लेने लगी।

जब यह रस पूरा चाट कर सुप्रीमो ने साफ कर दिया तब कहीं जाकर ज़न्नत शिथिल हुई। अब सुप्रीमो का 7" का नाग फुंफ़कार रहा था, उसको ऐसी रसीली चूत दिखाई दे रही थी तो उससे कहाँ बर्दाश्त होना था।

मगर सुप्रीमो अभी कुछ और भी चाह रहा था, उसने ज़न्नत की चूत चोदने की उतावली नहीं दिखाई, वो खुद बेड पर बैठ गया और ज़न्नत को कहा- अब जरा मेरे इस शेर को तो अपने मखमली होंटों का रस पिला दो ज़न्नत... अपने लबों का इसे स्पर्श करवा दो तो इसे चैन मिले...

सुप्रीमो के बस कहने की देर थी कि ज़न्नत ने सुप्रीमो के लण्ड पर अपने रसीले अधर रख दिये, उसे चूम लिया।

ज़न्नत खुद कोई मौका गंवाना नहीं चाह रही थी सुप्रीमो को खुश करने का...

वो सख्त लौड़े के सुपारे को अपनी जीभ से चाटने लगी...

सुप्रीमो तो जैसे हवा में उड़ने लगा।

जन्नत ने धीरे-धीरे लौड़े को चूसना सुरू कर दिया, अब वो पूरा लौड़ा अपने मुँह में लेकर चूस रही थी।

सुप्रीमो ने अपनी आँखें बन्द कर ली थी, वो बस मज़ा ले रहा था...

जब उसके बर्दाश्त से बाहर हो गया तो उसने अपनी पिचकारी जन्नत के मुँह में छोड़ दी- अहा... हाह... अहम्म... उम्माह...

सुप्रीमो ने जन्नत का सिर के पीछे से उसे पकड़ लिया और तब तक लौड़ा बाहर नहीं निकालने दिया जब तक उसके वीर्य की एक एक बूंद जन्नत के हलक से नीचे नहीं उतर गई...

जन्नत को तो सांस लेना भी मुश्किल हो गया था... बड़ी मुश्किल से उसने खुद को सुप्रीमो के पंजे से छुड़ाया और झट से बाथरूम में भाग गई।

कुछ देर बाद जन्नत अपने नंगे बदन को नुमाया करती बल खाती बाथरूम से बाहर आई तो उसके नंगे गोरे बदन को देख सुप्रीमो के लौड़े ने देर नहीं लगाई, वो फिर से खड़ा हो गया।

सुप्रीमो- अब मेरी जान, बस इसे अपनी चिकनी चूत में ले ले... देख यह पूरा तैयार है तुझे मज़ा देने के लिए... आ जा, लेट जा, आज तुझे चोद कर मैं तेरे नाजुक बदन पर अपनी मुहर लगा दूँ।

जन्नत सीधी लेट गई सुप्रीमो ने उसकी टाँगें फेला दी, अब वो इतना उत्तेजित हो चुका

था, उसकी साँसें तेज हो गई थी, वो अब और देर नहीं कर सकता था, वो उसके ऊपर आ गया और उसके पैरों को अपने पैरों से फैलाया और अपना खड़ा लंड उसकी चूत पर रख दिया।

ज़न्नत- आओ मेरे जानू, अब मुझसे भी रहा नहीं जा रहा...

सुप्रीमो ने लौड़े पर दबाव बनाया और सर से सरकता हुआ लौड़ा ज़न्नत की गीली चूत में जा समाया।

और धीरे धीरे लंड की गहराई का सफर कर रहा था।

अब झटकों का सिलसिला शुरू हो गया... ज़न्नत सुप्रीमो का पूरा साथ दे रही थी, वो अपने चूतड़ उचका कर हिला हिला कर चुदने लगी।

सुप्रीमो भी रेलगाड़ी की तरह 'फक फक फक' लौड़ा ज़न्नत की चूत में पेलने लगा।

ज़न्नत- आह... आई... और ज़ोर से चोदो मेरे जानू... आह... आपकी जान आह... पूरा मज़ा लेना चाहती है... आज की आह... इस चुदाई को यादगार बना दो...
जैसे जैसे समय बीतता गया, रोमांच बढ़ता गया, रफ़्तार बढ़ती गई, कमरे में साँसों का तूफान सा आ गया।

सुप्रीमो का लौड़ा भी पूरे उफान पर था, ज़न्नत की मक्खन जैसी चिकनी चूत की गर्मी उसे पिघलने पे मजबूर कर रही थी।

वो कब तक लड़ पाता ऐसी सुलगती चूत से...

उसमें भी उत्तेजना भर गई, वो फूलने लगा, ज्वालामुखी किसी भी पल फट सकता था...

सुप्रीमो ने स्पीड तेज कर दी, अपनी पूरी ताकत से वो जन्नत को चोदने लगा।

आखिरकार उसके लौड़े ने लावा उगल दिया, गर्म गर्म वीर्य की धार जब जन्नत की चूत की दीवारों पे लगी तो उसका बाँध भी टूट गया और फिर जन्नत की चूत गरम गरम वीर्य से भरी हुई थी।

दोनों का वीर्य अब एक-दूसरे में विलीन होने लगा।

यह एक नये युग की शुरुआत थी, अश्लीलता को आम आदमी तक लाने के लिए एक हिरोइन का त्याग था।

दोनों वैसे ही एक दूसरे से लिपटे हुए पड़े रहे काफ़ी देर तक... लंड धीरे धीरे छोटा होता जा रहा था, और जैसे जैसे वो छोटा होता जा रहा था, वो चूत से बाहर निकलता जा रहा था।

जन्नत- क्यों मेरे सरताज... आपको मज़ा आया या नहीं? देखो मैंने अपना सब कुछ आपको दे दिया... अब मेरी फिल्म आपके हाथ में है।

सुप्रीमो जन्नत के ऊपर लेटा लेटा बोला- जन्नत, तुमने मुझे जन्नत दिखाई तो तुम्हारी फिल्म रिलीज होगी लेकिन एक बात कहूँ, तुमने मुझे ऐसा क्या खास दे दिया जो कह रही हो कि अपना सबकुछ आपको दे दिया? पता नहीं कितने मर्दों की झूठी चूत मेरे सामने परोसी है तुमने...

सुप्रीमो की बात सुनकर जन्नत थोड़ी चौंक सी गई, उसको ज़रा भी उम्मीद नहीं थी कि सुप्रीमो ऐसा कहेगा।

कहानी जारी रहेगी...

Other stories you may be interested in

देहाती मामा के साथ मेरे अरमान-2

दोस्तो, एक बार फिर मैं लव आप सभी प्यारे पाठकों का स्वागत करता हूँ कहानी के दूसरे भाग में. इसके अलावा इस कहानी को लेकर आपका जो प्यार मिल रहा है, उसके लिए आपका और अन्तर्वासना का धन्यवाद. कहानी के [...]

[Full Story >>>](#)

पतंग कटी और भाभी की चूत फटी

नमस्कार दोस्तो, मेरा नाम विशु पटेल है. मैं अन्तर्वासना का पुराना पाठक हूँ. यूं तो कभी सोचा न था कि सबकी गर्म गर्म कहानी पढ़ते पढ़ते एक दिन अपनी खुद की कहानी लिखूंगा. यह कहानी मेरी सच्ची कहानी है. आशा [...]

[Full Story >>>](#)

प्यासी बंगालन की चूत चुदाई

नमस्कार दोस्तो, अन्तर्वासना पर ये मेरी पहली लिखी हुई कहानी है. मेरा नाम मुदित है और ये मेरी और मेरी मकान मालकिन के साथ चूत चुदाई की कहानी है. चूंकि इस मंच पर ये मेरी पहली कहानी है, तो यदि [...]

[Full Story >>>](#)

बस में मिली फौजन भाभी को चोदा

दोस्तो, मैं हिमाचल का रहने वाला हूँ. मेरा नाम सनी है. कद 5 फुट 7 इंच है, लंड 6 इंच का बहुत मोटा है. मेरा लंड किसी लड़की या भाभी को चुदाई का पूरा मजा देने में काबिल है. मैं [...]

[Full Story >>>](#)

देहाती मामा के साथ मेरे अरमान-1

प्यारे दोस्तो, मैं लव शर्मा एक बार फिर हाज़िर हूँ. अपने जीवन के एक और सत्य घटनाक्रम को एक कहानी के माध्यम से आप तक पहुँचाने के लिए. ठंड का मौसम सम्भोग और जिस्मानी आनन्द के लिए सबसे उपयुक्त माना [...]

[Full Story >>>](#)

